NEERAJ®

भारतीय सरकार और राजनीति

(Indian Government and Politics)

B.P.S.C.-132

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Prieti Gupta

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

भारतीय सरकार और राजनीति

(Indian Government and Politics)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Question Paper—December-2023 (Solved) 1

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2

Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. उदारवादी 1
(Liberal)

2. मार्क्सवादी अवधारणा 12
(Marxist Concept)

3. गांधीवादी 27
(Gandhian)

4. मूलभूत विशेषताएं 42
(Basic Features)

5. मौलिक अधिकार 53
(Fundamental Rights)

6. राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांत और मूल कर्त्तव्य 62
(Directive Principles of State Politics and Fundamental Duties)

7. विधायिका 72
(Legislature)

8. कार्यपालिका 84
(Executive)

9. न्यायपालिका 92
(Judiciary)

10. जाति, वर्ग एवं जनजाति 103
(Caste, Class and Tribe)

11. जेंडर 112
(Gender)

12. मजदूर और किसान 122
(Workers and Farmers)

13. धर्मनिरपेक्षता 131
(Secularism)

14. सांप्रदायिकता 139
(Communalism)

15. दल एवं दलीय व्यवस्था 148
(Parties and Party System)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारतीय सरकार और राजनीति

(Indian Government and Politics)

B.P.S.C.-132

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। इस प्रश्न-पत्र के दो भाग हैं। प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. भारतीय राजनीति का अध्ययन मार्क्सवादी दृष्टिकोण से कैसे किया जा सकता है? समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-15, प्रश्न 5, पृष्ठ-19, प्रश्न 7 तथा प्रश्न 8

प्रश्न 2. राज्य के नीति निर्देशक तत्व और मौलिक अधिकारों के निष्पादन में चुनौतियों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-65, प्रश्न 3

प्रश्न 3. राजनीति में जाति की भूमिका की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-105, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) आर्थिक उदारीकरण तथा श्रमिक और किसान आन्दोलन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-124, 'किसान एवं मजदूर आंदोलन पर उदारीकरण का प्रभाव' तथा पृष्ठ-127, प्रश्न 8

(ख) धर्मनिरपेक्षता विरोधी (Anti-Secularism)

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-132, 'धर्मनिरपेक्षता विरोधी'

भाग-II

प्रश्न 5. भारत में कैबिनेट और संसद के बीच संबंधों की प्रकृति पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-87, 'कैबिनेट और संसद' तथा पृष्ठ-88, प्रश्न 3

प्रश्न 6. कांग्रेस प्रभुत्व युग की विशेषताओं और इसके पतन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-150, प्रश्न 2 तथा पृष्ठ-148, 'कांग्रेस पार्टी का पतन : 1967-1989'

प्रश्न 7. स्वतंत्रता पश्चात् जेंडर-आधारित आन्दोलनों की विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-112, 'ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' तथा पृष्ठ-113, 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का समय'

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) साम्प्रदायिकता और मीडिया

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-143, प्रश्न 5

(ख) भारतीय राजनीति के लिए उदार दृष्टिकोण के बदलते दायरे

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, प्रश्न 3

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भारतीय सरकार और राजनीति

(Indian Government and Politics)

B.P.S.C.-132

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। इस प्रश्न-पत्र के दो भाग हैं। प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. भारतीय राजनीति का अध्ययन उदार दृष्टिकोण द्वारा कैसे किया जा सकता है, समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, प्रश्न 2, पृष्ठ-3, प्रश्न 4

प्रश्न 2. भारतीय संविधान की जरूरी विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-42, 'प्रमुख विशेषताएं'

प्रश्न 3. कार्यकारी (Executive) को नियंत्रित करने लिए संसदीय उपकरणों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-90, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर नोट लिखिए–

(क) सांप्रदायिकता और राज्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-140, 'सांप्रदायिकता और राज्य'

(ख) जेंडर और विकास

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-114, प्रश्न 3

भाग-II

प्रश्न 5. जाति, वर्ग और राजनीति के बीच संबंधों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-105, प्रश्न 2 तथा प्रश्न 3

प्रश्न 6. भारत में अमीर किसानों के आंदोलन की प्रकृति की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-124, 'अमीर किसान एवं किसान आंदोलन' तथा पृष्ठ-127, प्रश्न 7

प्रश्न 7. भारत में बहुदलीय व्यवस्था के विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-150, प्रश्न 3 तथा पृष्ठ-153, प्रश्न 7

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर नोट लिखिए–

(क) धर्मनिरपेक्षता की धारणा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-133, प्रश्न 1

(ख) राज्य के नीति निर्देशक तत्व

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-64, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारतीय सरकार और राजनीति
(Indian Goverment and Politics)

उदारवादी
(Liberal)

1

परिचय

राजनीति के अंतर्गत राजनीतिक संस्थाएं, प्रक्रियाएं तथा समाज के विभिन्न समुदायों से संबंधित विषय आते हैं। सरल शब्दों में, राजनीति का संबंध राज्य को राजकीय व गैर-राजकीय समूहों व संगठनों से जोड़ना है। उदारवादी परिप्रेक्ष्य ने भारतीय राजनीति में 1950 एवं 1960 में अपना प्रभुत्व जमाया था।

उदारवाद का प्रारम्भ राजतंत्र के विरुद्ध एक प्रतिरोध से हुआ, जिसका संबंध जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से था। व्यक्ति की स्वतंत्रता की प्राप्ति तथा राज्य सत्ता को चुनौती देने के लिए उदारवाद ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वतंत्रता की मांग की। इन स्वतंत्रताओं से संबंधित मुख्य समस्या का संबंध राज्य एवं व्यक्ति से था। उदारवाद का आरंभिक उद्देश्य अधिक रचनात्मक नहीं था। 19वीं शताब्दी में यह एक प्रगतिशील विचारधारा के रूप में व्यक्ति व राष्ट्रों के अधिकारों के लिए लड़ती रही। पिछले कई वर्षों से उदारवाद को अन्य विचारधाराओं; जैसे–मार्क्सवाद, फासीवाद आदि तथा राजनीतिक आन्दोलनों का सामना करना पड़ रहा है।

अध्याय का विहंगावलोकन

उदारवादी : अवधारणा के प्रमुख तत्त्व

भारतीय राजनीति की उदारवादी अवधारणा को गैर-मार्क्सवादी, संरचनात्मक-कार्यात्मक या व्यवस्थित धारणा कहा जा सकता है, जिसके मुख्य तत्त्व नीचे दिए गए हैं–

संस्थाएं : राजनीतिक व्यवस्था, राज्य नहीं

1980 के मध्य में उदारवादी अवधारणा के अंतर्गत राज्य की बजाय राजनीतिक व्यवस्था को संरचनात्मक-कार्यात्मक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में अधिक बल दिया गया। इस व्यवस्था के अंतर्गत राजनैतिक दल, हित समूह आदि संगठन सम्मिलित हैं। ये राजनैतिक संस्थाएं भारतीय राजनीति पर 1950 से चार दशकों तक अपना प्रभुत्व बनाने में सफल रही हैं।

प्रक्रियाएं

प्रक्रियाओं के अंतर्गत विभिन्न संस्थाओं व संगठनों के कार्यों का अध्ययन किया जाता है। लोकतंत्र के आविर्भाव से राजनैतिक प्रक्रियाएं भी लोकतांत्रिक हुई हैं। उदारवादी धारणा राजनीति में जन भागीदारी की पक्षधर है और इसने परंपरागत एवं सामंती सामाजिक व्यवस्था के पतन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मूल्य

उदारवादी अवधारणा के अन्य तत्त्व मूल्य हैं, जो लोगों के वैयक्तिक एवं सामुदायिक अधिकारों से संबंधित हैं। बिना कमजोर वर्ग के अधिकारों की रक्षा किए बिना भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में राजनीतिक मूल्य जैसे स्वतंत्रता, मानव अधिकार का कोई सरोकार नहीं है।

राजनीति के अध्ययन की उदारवादी अवधारणा

भारतीय राजनीति के अध्ययन के संदर्भ में उदारवादी अवधारणा को व्यवस्थावादी उपागम के रूप में समझा जा सकता है। **डेविड ईस्टन** और **कोलमैन** जैसे राजनीतिज्ञ विशेषज्ञों ने विकासशील देशों की राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए व्यवस्थावादी उपागम का सर्वप्रथम प्रयोग किया था। इस अवधारणा के अंतर्गत विकास का तात्पर्य अर्थव्यवस्थावादी विकास से अलग था और यह आधारभूत ढांचे के विकास पर आधारित थी। राजनीतिक व्यवस्था के इस मूलभूत ढांचे में राजनीतिक संस्थाएं, संरचनाएं व प्रक्रिया सम्मिलित हैं, जो एक-दूसरे से मेल-मिलाप व संघर्ष दोनों करती हैं। इससे राजनीतिक व्यवस्था लचीली व लंबे वर्ष तक बनी रहती है।

भारतीय राजनीति के अध्ययन के संदर्भ में व्यवस्थावादी उपागम पर **रजनी कोठारी** व **सी.पी. भांभरी** द्वारा विचार प्रस्तुत किए गए हैं। **रजनी कोठारी** की पुस्तक 'भारत में राजनीति' कार्यात्मक व्यवस्था का अनुसरण करती है, जबकि **भांभरी** ने इस पुस्तक की आलोचना करते हुए कहा है कि इसमें राजनीतिक सत्ता के वितरण व साम्राज्यवाद जैसे मुद्दे सम्मिलित नहीं किए गए हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

विभिन्न विद्वानों ने उस समय के मुख्य राजनीतिक दल कांग्रेस का अध्ययन करने के लिए उदारवादी उपागम का प्रयोग किया। 1970 के बाद उदारवादी उपागम में परिवर्तन आया और इसने राज्य की अवधारणा को भी सम्मिलित किया।

उदारवादी अवधारणा का परिवर्तित क्षेत्र

1950 के पश्चात उदारवादी उपागम के प्रमुख तत्त्वों में मार्क्सवादी तत्त्वों का भी समावेश हुआ। इसमें राज्य की अवधारणा के अतिरिक्त लोकतांत्रिक मूल्यों व सामाजिक परिवर्तनों की गतिविधियों का अध्ययन भी किया जाने लगा। इसके अंतर्गत नागरिक समाज, बहुसंस्कृतिवाद व सामाजिक पूंजी जैसे तत्त्व भी सम्मिलित हुए।

नागरिक समाज

उदारवादी उपागम का प्रमुख तत्त्व व्यक्ति की स्वतंत्रता है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में सभी समुदाय, जाति समूह, वंचित वर्गों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसके नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं, किन्तु इससे बहुधा व्यक्तिगत स्वतंत्रता का दमन होता है। नागरिक समाज संगठन नागरिक समाज से अलग है और उदारवादी उपागम संगठनों एवं व्यक्तियों के अधिकारों की व्याख्या करता है।

बहुसंस्कृतिवाद

उदारवादी उपागम में व्यक्तियों के अधिकारों के अतिरिक्त सामूहिक व सामुदायिक अधिकारों को भी पहचान प्रदान की गई है। बहुसंस्कृतिवाद व्यक्तियों के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से संबंधित है। सभी सांस्कृतिक समुदाय अपनी विशिष्टता बनाए रखने के लिए विभिन्न अधिकारों की मांग करते हैं, जिससे ये समुदाय अपनी संस्कृति, भाषा व अन्य मुख्य विशेषताओं को संरक्षण प्रदान कर सकें।

सामाजिक पूंजी

सामाजिक पूंजी की अवधारणा का प्रयोग अक्सर विभिन्न वर्गों व समुदायों के मध्य संबंध को समझने के लिए किया जाता रहा है। नए सामाजिक आंदोलनों के उदय होने के कारण सामाजिक पूंजी की महत्ता भी बढ़ गई है।

अवधारणाओं का अभिसरण

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय राजनीति के अध्ययन के लिए मार्क्सवादी और गैर-मार्क्सवादी उपागमों का प्रयोग किया गया है। ये दोनों उपागम पहले एक-दूसरे से संबंधित नहीं थे, किन्तु वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति के संदर्भ में इन दोनों अवधारणाओं का अभिसरण हो गया है। कई विद्वानों के लेखों, जैसे–**फ्रेकल, रूडोल्फ** तथा **प्रणवबर्धन** आदि के लेखों से यह स्पष्ट होता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. उदारवादी उपागम के प्रमुख तत्त्व क्या हैं?

उत्तर–उदारवादी उपागम के प्रमुख तत्त्वों में संस्थाएं, प्रक्रियाएं व मूल्य सम्मिलित हैं। इनका विस्तृत परिचय इस प्रकार है–

1. संस्थाएं–संस्थाओं के अंतर्गत राज्य की तुलना में राजनीतिक व्यवस्था पर अधिक बल दिया गया है। इन संस्थाओं में राजनैतिक दल, हित समूह या नागरिक समाज संगठन सम्मिलित हैं। ये राजनैतिक संस्थाएं सामाजिक संरचनाओं, जैसे–जाति, भाषा, धर्म, क्षेत्र इत्यादि का पक्ष सुनकर एक आम सहमति बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये राजनीतिक संस्थाएं ही राजनीतिक दल, प्रभावी दबाव समूह, विधायिका व कार्यपालिका का आधार बनती हैं। भारतीय राजनीति में इन संस्थाओं का अत्यंत महत्त्व है।

2. प्रक्रियाएं–उदारवादी अवधारणा में प्रक्रियाओं के अंतर्गत विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों के कार्यों का अध्ययन किया जाता है। इन्हें राजनीतिक लामबंदी व हित एकत्रीकरण के रूप में भी व्यक्त किया जाता है। लोकतंत्र की समृद्धि के फलस्वरूप प्रक्रियाओं का भी लोकतंत्रीकरण हुआ है। उदारवादी अवधारणा भी लोगों के राजनीतिक सहभागिता को अनुमति देती है, जिससे जनतंत्रीकरण की प्रक्रिया को बल मिला। इसने भारतीय राजनीति के संदर्भ में निम्न वर्ग को भी प्रभावित किया तथा यह प्रक्रिया अभी भी चालू है। यह प्रक्रिया भारत के परंपरागत एवं सामंती सामाजिक व्यवस्था के पतन का मुख्य कारण है। इसके कारण राजनीतिक प्रक्रिया में स्वतंत्रता तथा समानता का समावेश भी हुआ तथा विभिन्न राजनीतिक आंदोलनों, नागरिक समाज के संस्थाओं का उदय तथा बहुसांस्कृतिकवाद ने देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत किया।

3. मूल्य–उदारवादी अवधारणा का तीसरा प्रमुख तत्त्व है–मूल्य अर्थात स्वतंत्रता, मानव अधिकार व समानता। यह तत्त्व प्रमुखतया वैयक्तिक एवं सामुदायिक अधिकारों से संबंधित है। राज्य का कर्त्तव्य है कि वह कमजोर वर्गों, अनुसूचित जातियों व जनजातियों तथा अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। उदारवादी अवधारणा व्यक्तिगत अधिकारों व स्वतंत्रता के अतिरिक्त किसी भी समुदाय की भाषा, संस्कृति, बोली आदि की सुरक्षा को भी महत्त्व देती है। भारत जैसे देश में इनकी सुरक्षा किए बगैर लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा करना संभव नहीं है।

प्रश्न 2. राजनीति के अध्ययन में उदारवादी उपागम, संरचनात्मक कार्यात्मक अवधारणा से किस प्रकार संबंधित है? संक्षिप्त में व्याख्या कीजिए।

उत्तर–उदारवादी उपागम एक गैर-मार्क्सवादी अवधारणा है, जो भारतीय राजनीति को संरचनात्मक-कार्यात्मक या व्यवस्थावादी

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अवधारणा के रूप में देखता है। उदारवाद शब्द का प्रयोग राजनीति में स्वतंत्रता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता व सामुदायिक स्वतंत्रता के लिए किया जाता है। अत: उदारवादी उपागम व्यक्ति के लोकतांत्रिक अधिकारों एवं राजनीतिक संस्थाओं को प्राथमिकता देता है। उदारवादी उपागम को 1950 एवं 1960 के दशक में व्यवहारवादी उपागम ने अत्यधिक प्रभावित किया। व्यवहारवादी उपागम ने राजनीति विज्ञान में संरचनात्मक-कार्यात्मक व्यवस्था पर अधिक बल दिया था। व्यवस्थावादी उपागम व्यवहारवादी आंदोलन के फलस्वरूप अस्तित्व में आया। **डेविड ईस्टन** और **कोलमैन** ने इस उपागम का सर्वप्रथम प्रयोग विकासशील देशों की राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए किया था। इस उपागम का प्रमुख उद्देश्य विकासशील देशों में आधुनिक राजनीतिक संस्थाओं के विकास का अध्ययन करना था। संरचनात्मक-कार्यात्मक व्यवस्थावादी उपागम के अंतर्गत राजनीतिक व्यवस्था का संबंध राजनीतिक संस्थाओं, संरचना और प्रक्रिया से है। ये तीनों परस्पर मेल-मिलाप तथा संघर्षरत भी रहती है। ये आपस में संतुलन भी स्थापित करती हैं, किन्तु कभी-कभी गैर-संतुलन के लिए भी उत्तरदायी होती है। इस प्रकार की परिस्थिति में राजनीतिक व्यवस्था बनी रहती है। **रजनी कोठारी** की पुस्तक 'भारत की राजनीति' भी कार्यात्मक व्यवस्था का अनुसरण करती है, जो लचीली राजनीति व्यवस्था की समर्थक है। 1970 के दौरान विभिन्न विद्वानों ने अपने शोधों में व्यवस्थावादी उपागम का प्रयोग किया। उन्होंने राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों, जाति, धर्म, भाषा, चुनाव, नेतृत्व व दबाव समूह को भी सम्मिलित किया। उस समय की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस का अध्ययन भी उदारवादी परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत ही किया गया। अत: उदारवादी उपागम मुख्य तौर पर राजनीति को संरचनात्मक एवं कार्यात्मक व्यवस्था के रूप में देखता है।

प्रश्न 3. उदारवादी उपागम के क्षेत्र में हुए परिवर्तन की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर–1950 के पश्चात उदारवादी उपागम में भी परिवर्तन हुआ। इसने कुछ शब्दों के प्रयोग में भी लचीलेपन का प्रदर्शन किया, जैसे–राज्य एवं राजनीतिक अर्थशास्त्र का प्रयोग आरंभ हुआ। इसके अध्ययन-क्षेत्र का भी विस्तार हुआ तथा इसमें नागरिक समाज, बहुसंस्कृतिवाद तथा सामाजिक पूंजी को भी सम्मिलित किया गया। इनका परिचय इस प्रकार है–

1. नागरिक समाज–उदारवादी उपागम का मुख्य आधार व्यक्तिगत स्वतंत्रता है। राष्ट्र अथवा राज्य के संदर्भ में उदारवादी परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत समुदाय, जाति समूह, वंचित वर्गों आदि के अधिकारों की भी रक्षा करना सम्मिलित है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में भी नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं, जो सुरक्षा भी देते हैं, किन्तु कई बार राज्य नागरिकों की रक्षा करने में असफल रहा है। नागरिक समाज संगठन नागरिक समाज से अलग हैं। **नीरा चंडोक** के अनुसार नागरिक समाज का स्थान राज्य एवं परिवार के मध्य में है। उदारवादी उपागम में संगठनों एवं व्यक्तियों के अधिकारों की व्याख्या की गयी है। ये अधिकार किसी भी व्यक्ति के संगठन बनाने के अधिकार, अभिव्यक्ति के अधिकार, विरोध जताने के अधिकार तथा जनमत बनाने से संबंधित हैं। इस उपागम द्वारा राज्य और समाज के बीच संबंधों का विश्लेषण किया जा सकता है।

2. बहुसंस्कृतिवाद–उदारवादी उपागम में वैयक्तिक अधिकारों के अतिरिक्त सामूहिक अधिकारों को भी मान्यता दी गयी है। भारत एक बहुसांस्कृतिक समाज है, जिसमें विविधि समूहों को अधिकार प्रदान किए गए हैं। **भीखू पारेख** के अनुसार कोई भी बहुसांस्कृतिक समाज विभिन्न समूहों की मांग को अनसुना नहीं कर सकता। ये सभी सांस्कृतिक समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए प्रयास करते हैं, जिससे ये अपनी भाषा व संस्कृति की रक्षा कर सकें।

3. सामाजिक पूंजी–सामाजिक पूंजी की अवधारणा का प्रयोग उदारवादी उपागम में 1990 के पश्चात हुआ है, जिसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न समुदायों के मध्य संबंधों की व्याख्या करना है। यह नागरिक समाज और जनतंत्र के अस्तित्व में होने के बारे में बताता है। सामाजिक पूंजी को विभिन्न समुदायों में परस्पर मेल-मिलाप तथा संबंध स्थापित करने के लिए जाना जाता है।

इस प्रकार, उदारवादी उपागम के क्षेत्र में हुए परिवर्तन विभिन्न संस्थाओं में आम सहमति बनाने के लिए प्रयासरत रहते हैं।

प्रश्न 4. भारतीय राजनीति के अध्ययन के लिए उदारवादी एवं मार्क्सवादी उपागमों के अभिसरण का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर–भारतीय राजनीति का अध्ययन दो परिप्रेक्ष्यों में किया जाता है–मार्क्सवादी तथा गैर-मार्क्सवादी। गैर-मार्क्सवादी उपागम का तात्पर्य उदारवादी उपागम से है, जिसने भारतीय राजनीति में 1950 एवं 1960 में अपना वर्चस्व स्थापित किया। परंपरागत रूप से ये दोनों उपागम एक-दूसरे से अलग थे, किन्तु 1980 के पश्चात से इन दोनों उपागमों के मध्य आपसी मेलजोल या अभिसरण हो गया है। इन दोनों उपागमों की अवधारणाएं अपनी-अपनी प्राथमिकताओं एवं अपने विचारों का प्रयोग करती हैं। अब दोनों उपागम आपस में अभिसरण की प्रक्रिया से भी प्रभावित हुए। इन दोनों ही उपागमों में राज्य, राजनीतिक अर्थव्यवस्था, संस्थाएं, राजनीतिक प्रक्रियाएं एवं परिवर्तन का प्रयोग किया। इसका उदाहरण हमें कई विद्वानों के लेखों, जैसे–**फ्रेंकल**, **प्रणवबर्धन**, **रूल्फ** आदि के लेखों में मिलता

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

है। **फ्रेंकल** ने विकासात्मक योजना तथा संस्थात्मक राजनीति के मध्य व्याप्त अंतर की व्याख्या की है, तो **प्रणवबर्धन** जैसे नव मार्क्सवादी विचारक के तर्क के अनुसार भारतीय राज्य एक स्वायत्त संस्था है, जो विभिन्न वर्गों के मध्य सत्ता संबंधों को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। **रूडोल्फ** के अनुसार भारतीय राजनीति पर वर्ग राजनीति का प्रभाव है तथा यह पूंजी एवं श्रम के मध्य तीसरे एक्टर के रूप में कार्य करती है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. उदारवाद क्या है? इस पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–उदारवाद न कोई विशेष सिद्धांत है, न कुछ सिद्धांतों का समूह, बल्कि यह जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण है। उदारवाद एक सतत् गतिशील एवं लचीली संकल्पना है। इसका उदय राजतंत्र और सामंतशाही तथा चर्च की निरकुंशता के विरोध में हुआ था। लचीलेपन एवं परिवर्तनशीलता के कारण उदारवाद की विशुद्ध परिभाषा देना कठिन है। **लास्की** कहते हैं, "उदारवाद की व्याख्या आसान नहीं है, परिभाषित करना तो और भी कठिन है, क्योंकि यह कोई सिद्धांत न होकर मस्तिष्क की एक सोच/आदत है।" उदारवाद अपने लचीले दृष्टिकोण के कारण लोगों के बेहतर भविष्य बनाने का प्रयास करता है। यह विभिन्न सामाजिक समस्याओं के प्रति एक अस्थायी सुझाव है। **रिचर्ड वैलहिम** के अनुसार, उदारवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता मूल्य में विश्वास का नाम है, वहीं **सारटोरो** इसे साधारण व सरल रूप में वैयक्तिक स्वतंत्रता, न्यायिक सुरक्षा तथा संविधानिक राज्य का सिद्धांत तथा व्यवहार मानते हैं।

उदारवादी संकल्पना तीन सौ वर्ष पुरानी है, किन्तु 19वीं शताब्दी में व्यक्तिगत स्वतंत्रता में हस्तक्षेप न करने को ही उदारवाद कहा गया। 20वीं शताब्दी में उदारवाद का रूप सकारात्मक हो गया। वह इस बात पर जोर देने लगा कि राज्य सभी व्यक्तियों के कल्याण तथा सुविधाओं का सही उपाय करे। उदारवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता में वृद्धि चाहता है। लास्की कहते हैं, "उदारवाद के विचार में स्वतंत्रता का भाव निहित है। यह भाव विवश भी कर सकता है। इस कारण उदारवाद सहनशीलता की मांग करता है, विशेष रूप से उन विचारों और प्रवृत्तियों के प्रति जिन्हें खतरनाक समझा जाता है, परन्तु जो मानवीय गुणों को दर्शाते हैं।" विभिन्न विचारकों ने उदारवाद के संबंध में विभिन्न विचार रखे हैं। कुछ इसे एक राजनीतिक सिद्धांत के रूप में अनेक तत्त्वों का समावेश मानते हैं। इन तत्त्वों में मुख्य हैं–एक लोकतंत्र और दूसरा व्यक्तिवाद। एक उदारवादी के लिए समाज या व्यक्ति ही सब-कुछ होता है, क्योंकि वह व्यक्ति के अधिकारों को प्राथमिकता देता है, जिससे उसकी स्वतंत्रता निश्चित हो और व्यक्ति का सुख स्वतंत्रता में ही है। यह व्यापक अर्थों में लोकतंत्र का पर्यायवाची है।

प्रश्न 2. भारतीय उदारवाद के तत्त्वों का उल्लेख करते हुए उससे संबंधित विचारधाराओं का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर–भारत में उदारवाद का आरंम्भ उच्च जाति से सम्बद्ध अंग्रेजी पढ़े-लिखे मध्यम वर्ग के द्वारा किया गया। भारतीय समाज एवं औपनिवेशिक शासन की उदारवादी समीक्षा का आरम्भ पुनर्जागरण से हुआ। इस विचारधारा के अगुवा भारतीय पूंजीपति वर्ग तथा नवीन बुद्धिजीवी वर्ग के प्रतिनिधि थे। बंगाल के भद्रलोक, मद्रास के ब्राह्मण, बंबई प्रेजीडेंसी के ब्राह्मण समुदाय इत्यादि के प्रतिनिधि इस विचारधारा के समर्थक थे। **राजा राममोहन राय, दादाभाई नौरोजी, सर सैयद अहमद खां, एस.एन. बैनर्जी, फिरोजशाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले, गोपाल गणेश अगरकर, महादेव गोविंद रानाडे** इत्यादि महापुरुषों ने भारतीय समाज की उदारवादी विचारधारा को विकसित किया। उदारवादी विचारकों का यह मत था कि भारतीय समाज की पुनर्संरचना ब्रिटिश शासन के माध्यम से की जा सकती है। इन्होंने ब्रिटिश शासन का विरोध नहीं किया, अपितु यह मानकर उनका समर्थन किया कि ब्रिटिश शासन भारतीयों को प्रगति के मार्ग पर बढ़ाने तथा सभ्य बनाने के लिए आवश्यक है।

ऐसा नहीं है कि ये उपनिवेशवाद के शोषणकारी स्वरूप से परिचित नहीं थे। वे अंग्रेजों के द्वारा भारत के आर्थिक शोषण तथा ब्रिटेन की ओर पूंजी निकास से परिचित थे तथा समय-समय पर इन्होंने उस पर आपत्ति जताई, किन्तु इसके लिए उन्होंने केवल प्रार्थना-पत्रों तथा पत्रिकाओं का ही सहारा लिया। इन्होंने अपने लेखों द्वारा तथा पत्र लिखकर ब्रिटिश शासन को गलत कार्य करने पर चेतावनी दी।

उदारवादी विचारकों की विचारधारा का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

1. महादेव गोविंद रानाडे–रानाडे प्रभावशाली उदारवादी विचारकों के प्रतिनिधि थे। उनका यह विचार था कि अपनी समस्याओं को हल करने के लिए, भारतीय अर्थव्यवस्था को पूंजीवाद का मार्ग अपनाना चाहिए तथा आर्थिक विकास में राज्य को महत्त्वपूर्ण सक्रिय भूमिका अदा करनी चाहिए। इनका मानना था कि औद्योगीकरण तथा कृषि के व्यवसायीकरण के द्वारा भारत में दरिद्रता तथा कृषि पर निर्भरता की समस्याओं को दूर किया जा सकता है तथा परिवर्तन की इस प्रक्रिया में राज्य को सक्रिय योगदान देना चाहिए, किन्तु राज्य को असीमित शक्तियां प्राप्त नहीं होनी चाहिए, उसे व्यक्तिगत स्वंतत्रता भी प्रदान करनी चाहिए। उनका यह मानना था कि चूंकि चेतना की स्वतंत्रता वास्तविक

NEERAJ PUBLICATIONS